

॥ रात्रिसूक्तम् ॥

.. rAtrisUktam ..

sanskritdocuments.org

May 10, 2017

---

.. rAtrisUktam ..

॥ रात्रिसूक्तम् ॥

Sanskrit Document Information



---

Text title : raatrisuuktam.h

File name : raatrisuukta2.itx

Category : sUkta

Location : doc\_devii

Author : Vedic Rishi

Language : Sanskrit

Subject : hinduism

Transliterated by : NA

Proofread by : NA

Description-comments : A prayer to the Goddess for joyful sleep.

Latest update : Nov. 17, 1998

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

Site access : <http://sanskritdocuments.org>

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

---


**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

May 10, 2017

*sanskritdocuments.org*

---



## ॥ रात्रिसूक्तम् ॥

विश्वेश्वरी जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम् ।  
निद्रां भगवतीं विष्णुरतुलां तेजसः प्रभुः ॥ १॥

ब्रह्मोवाच -  
त्वं स्वाहा त्वं स्वधात्वं हि वषट्कारस्वरात्मिका ।  
सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता ॥ २॥

अर्धमात्रा स्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः ।  
त्वमेव संध्या सावित्री त्वं देवी जननी परा ॥ ३॥

त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत् ।  
त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्तेच सर्वदा ॥ ४॥

विसृष्टौ सृष्टिरूपात्वम् स्थितिरूपाच पालने ।  
तथा संहतिरूपांते जगतोऽस्य जगन्मये ॥ ५॥

महाविद्या महामाया महामेधामहास्मृतिः ।  
महामोहा च भवती महादेवी महासुरी ॥ ६॥

प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी ।  
कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा ॥ ७॥

त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ज्ञीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा ।  
लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शांतिः क्षांतिरेवच ॥ ८॥

खङ्गिणी शृलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ।  
शंखिनी चापिनी बाणभुशुंडीपरिधायुधा ॥ ९॥

सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुंदरी ।  
परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी ॥ १०॥

यच्च किञ्चित् क्वचिद्वस्तु सदसद्धाखिलात्मिके ।  
तत्त्व सर्वस्य या शक्तिः सात्वं किं स्तूयसे सदा ॥ ११॥

यया त्वया जगन्नष्टा जगत्पाल्यतियो जगत् ।  
सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः ॥ १२॥

विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एवच ।  
कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान्भवेत् ॥ १३॥  
सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता ।  
मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ ॥ १४॥  
प्रबोधं न जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु ।  
बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ ॥ १५॥  
॥ इति रात्रिसूक्तम् ॥

इति

This rAtrisUkta is another version than mentioned in Rigveda. This or the one from Rigveda is to be recited 2-3 times before sleeping. It is said that by recitation any sleep disorder can be overcome. It also helps to bring one's mind in tune to sleep quicker. As a follow up, one can also keep reciting the following verse gliding gradually into sound sleep!

या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता ।  
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥

॥ इति॥

---

.. rAtrisUktam ..  
was typeset using Xe<sub>La</sub>TeX 0.99996  
on May 10, 2017

---

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

